INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

20वां कथन - अविवाहित सानंद की पारिवारिक दृष्टि

By : INVC Team Published On : 3 Jun, 2016 08:07 PM IST

- अरुण तिवारी -

प्रो जी डी अग्रवाल जी से स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद जी का नामकरण हासिल गंगापुत्र की एक पहचान आई आई टी, कानपुर के सेवानिवृत प्रोफेसर, राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय के पूर्व सलाहकार, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रथम सचिव, चित्रकूट स्थित ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अध्यापन और पानी-पर्यावरण इंजीनियरिंग के नामी सलाहकार के रूप में है, तो दूसरी पहचान गंगा के लिए अपने प्राणों को दांव पर लगा देने वाले सन्यासी की है। जानने वाले, गंगापुत्र स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद को ज्ञान, विज्ञान और संकल्प के एक संगम की तरह जानते हैं। पानी, प्रकृति, ग्रामीण विकास एवम् लोकतांत्रिक मसलों पर लेखक व पत्रकार श्री अरुण तिवारी जी द्वारा स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद जी से की लंबी बातचीत के हर अगले कथन को हम प्रत्येक शुक्रवार को आपको उपलब्ध कराते रहेंगे यह हमारा निश्चय है।

इस बातचीत की श्रृंखला में पूर्व प्रकाशित कथनों को पढ़ने के लिए यहाँ क्लिक करें।

आपके समर्थ पठन, पाठन और प्रतिक्रिया के लिए फिलहाल प्रस्तुत है :

स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद - 20वां कथन (**स्वामी सानंद एक ज़मीदार परिवार में जन्मे। उस ज़माने में इंजीनियर होना बडी बात थी। नौकरी भी उन्हे अच्छी-खासी ही मिली थी। लंबे समय तक वह किसी ऐसे समाज सेवा के काम में भी नहीं रहे कि विवाह उसमें अडचन होता ; बावजूद इसके उन्होने विवाह क्यों नहीं किया ? मेरी इस जिज्ञासा का जो उत्तर मिला, वह क्या दर्शाता है ? कृपया पढ़ें और अपने आकलन से हमें अवगत करायें। : प्रस्तोता**)

विवाह न करने का पहला कारण

मैने पहले बताया था न कि हमारे परिवार में एक महात्मा आते थे ; वही, जिन्होने मेरा नाम रखा था। वह वेदांती थे। कहते थे -"कामिनी कंचन संग जो रहे, उसका उद्धार नहीं हो सकता।" इधर घर में बाबाजी परिवार से भी थे और ब्रह्मचार्य के पक्षधर भी थे। इस तरह कुछ तो शुरु से ही साधुत्व की ओर रुझान रहा। जब मैं सन्यास लेने लगा, तो छोटे भाई ने कहा - "आप तो पहले से ही साधु हो। सन्यास लेने की क्या जरूरत है ?"

विवाह न करने का दूसरा कारण

विवाह न करने का एक दूसरा कारण भी था। मैं 14 साल की उम्र में ही मुजफ्फरनगर चला गया था ; अपनी चाची के पास। चाची को मैं अम्मा कहता था। चाचा को उनके बच्चे पापा कहते थे। मैं भी पापा ही कहता था। मुझे जैसा स्नेह अम्मा (चाची) से मिला, वैसा कहीं नहीं मिला। उनके स्नेह के आगे और किसी चीज का महत्व नहीं दिखता था। यूनिवर्सिटी की पढ़ाई के दौरान बनारस और रुडकी में रहा, तो भी मैं तरसता रहा अम्मा (चाची) के पास जाने के लिए।

छुट्टी में जाता कांधला ही था, लेकिन दिल अम्मा (चाची) के पास ही रहता था। पापा जी (चाचा) ज्यादा शराब पीने लगे थे। मेरे मन में आया कि यदि पापा जी (चाचा) को कुछ हो गया, तो अम्मा (चाची) का क्या होगा ? उनके बच्चों का क्या होगा ? ...तो विवाह न करने के पीछे एक यह बात भी मन जरूर थी, लेकिन असल तो बाबाजी और महात्मा के प्रभाव से ही हुआ।

अम्मा के बच्चों से लगाव अधिक

52 वर्ष की उम्र में पापाजी (चाचा) का निधन हो गया। इस बीच विवाह के लिए दबाव भी पडा। मैने अम्मा (चाची) के बेटे-बेटियों की शिक्षा...पढ़ाई में जब जैसी जरूरत हुई, किया। हालांकि मेरा अपने छोटे भाइयों से भी स्नेह रहा, लेकिन अम्मा (चाची) के बच्चों के साथ लगाव अधिक रहा। मैं आज भी जब कभी मुजफ्फरनगर जाता हूं, तो अम्मा (चाची) के बेटे अनिल के यहां ही ठहरता हूं। भाइयों के घर भी जाता हूं, लेकिन ठहरता अनिल के घर ही हूं। अनिल का बेटा चेतन एन्वायरोटेक में है। छोटा बेटा देहरादून में है। आज मेरी आवश्यकताओं को एस. के. गुप्ता (एन्वायरोटेक के संचालक) और चेतन ही देखते हैं।

परिवार को चेतावनी

हमारे परिवारों में आपस में काफी स्नेह है। पिछले वर्ष मैने परिवार को भी चेतावनी दे दी थी कि जो मेरे स्वास्थ्य की बात करेगा, वह मेरा शत्रु होगा। मैने कह दिया था कि आना, तो मेरी स्वास्थ्य की चिंता व चर्चा न करना। (**मुझे लगा कि पाठकों को स्वामी जी का पारिवारिक परिचय न मिला, तो यह श्रृंखला अधूरी रह जायेगी। इस बारे में जिज्ञासा पर स्वामी जी कुछ क्षण चुप रहे। तारीख - एक अक्तूबर, 2013; स्वामी जी के अनशन का 111वां दिन था। मैने सोचा कि यदि अभी न मालूम हो सका, तो मालूम नहीं कल हो न हो। अतः कई बार अनुरोध करने पर उन्होने थोडा-बहुत बताना स्वीकार किया। - प्रस्तोता**)

'व्यक्ति के नाते मेरा कोई महत्व नहीं'

मैं नहीं मानता कि एक व्यक्ति के नाते मेरा कोई महत्व है। मैं यह भी नहीं मानता कि मेरी कोई जीवनी लिखी जाये। हो सके, तो एयर पॉल्युशन (वायु प्रदूषण) के बारे में एन्वायरोटेक लिखे। (एन्वायरोटेक, दिल्ली में ओखला स्थित एक कंपनी है, जिसके प्रमुख संचालक श्री एस. के. गुप्ता हैं।) पवित्र, पी.एस.आई. (पीपुल्स साइंस इंस्टीटचुट, देहरादून) के हैं। उनके पास बहुत सामग्री है। जल-नदी प्रदूषण के बारे में पी.एस.आई. लिखे।

पारिवारिक परिचय

आपने मेरे परिवार के बारे में पूछा है। मेरे पिता का नाम श्री आनन्द स्वरूप है और माता जी का नाम श्रीमती लीला देवी। तरुण मेरा दत्तक पुत्र है। मेरे हिस्से में जो भी संपत्ति है, वह मैने तरुण को ही उत्तराधिकार में दी है।

एक बहन, पांच भाई

मेरी एक बहन है - स्नेहलता। स्नेह के पति भिवाडी में इंजीनियर हैं। हम भाइयों में उत्तम स्वरूप अग्रवाल मेरा पांचवां भाई है। एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग करके प्राइवेट एजुकेशन के क्षेत्र में है। चौथा, निरंजन स्वरूप अग्रवाल है। विकास स्वरूप, मेरा तीसरे नंबर का भाई है। विकास स्वरूप, इमरजेंसी के दौरान कांधला में ज्यादा सक्रिय रहे। वह सीधे-सीधे जे पी (लोकनायक जयप्रकाश नारायण) को मानते थे। विकास स्वरूप के एक बेटा और एक बेटी है। दामाद, कम्पयुटर हार्डवेयर इंजीनियर है। बेटा, नोएडा स्थित शारदा यूनिवर्सिटी के कम्पयुटर इंजीनियरिंग विभाग का अध्यक्ष है। दूसरे नंबर के भाई का नाम ओमप्रकाश है। ओमप्रकाश का बेटा, पॉलीटेक्निक कोचिंग करते हैं। बेटी-दामाद डॉक्टर हैं। चौथे नंबर वाले निरंजन खेती करते हैं। उनकी पहली पत्नी की पहली डिलीवरी में डेथ हो गई थी।

बच्चा-जच्चा दोनो का देहांत हो गया था। उससे निरंजन काफी विक्षिप्त हो गया था ; एबनॉरमल। हम उनका दूसरा विवाह चाहते थे। उन्होने विधवा से विवाह किया। जिससे विवाह किया, उनका एक बच्चा भी था ; एक साल का। बच्चे के बाबा उसे अपने पास रखना चाहते थे। बच्चे की मां ने कहा कि यदि मैं न होती, तो बच्चा भी न होता और शादी भी न होती।

तरुण की चिंता

तरुण ही वह बच्चा है। बच्चा घर आया। उसी वक्त मैने आई. आई. टी. छोडा था। मुझे तरुण से लगाव हो गया। उधर नई ब्याहता से निरंजन को लडकी हो गई। 1982 में लडका भी हो गया। उसके बाद तरुण के प्रति निरंजन का रुख बदल गया। तरुण की पैदाइश सन् 75 की है। 1982 में तरुण छह साल का हो गया था। तब मैं प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की नौकरी में था। मेरी सगी बहन ने मुझे ये सब बताया। तरुण भी कहता था कि पिताजी बहुत परेशान करते हैं। मैं तरुण के भविष्य के प्रति चिंतित हुआ। **मैने सोचा कि मैं क्या कर सकता हूं ?**

अगले सप्ताह दिनांक 10 जून, 2016 दिन शुक्रवार को पढ़िए स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद श्रृंखला का 21वां और अंतिम कथन

परिचय -:

अरुण तिवारी

लेखक ,वरिष्ट पत्रकार व् सामजिक कार्यकर्ता

1989 में बतौर प्रशिक्षु पत्रकार दिल्ली प्रेस प्रकाशन में नौकरी के बाद चौथी दुनिया साप्ताहिक, दैनिक जागरण-दिल्ली, समय सूत्रधार पाक्षिक में क्रमश: उपसंपादक, वरिष्ठ उपसंपादक कार्य। जनसत्ता, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, अमर उजाला, नई दुनिया, सहारा समय, चौथी दुनिया, समय सूत्रधार, कुरुक्षेत्र और माया के अतिरिक्त कई सामाजिक पत्रिकाओं में रिपोर्ट लेख, फीचर आदि प्रकाशित। 1986 से आकाशवाणी, दिल्ली के युववाणी कार्यक्रम से स्वतंत्र लेखन व पत्रकारिता की शुरुआत। नाटक कलाकार के रूप में मान्य। 1988 से 1995 तक आकाशवाणी के विदेश प्रसारण प्रभाग, विविध भारती एवं राष्ट्रीय प्रसारण सेवा से बतौर हिंदी उद्घोषक एवं प्रस्तोता जुड़ाव।

इस दौरान मनभावन, महफिल, इधर-उधर, विविधा, इस सप्ताह, भारतवाणी, भारत दर्शन तथा कई अन्य महत्वपूर्ण ओ बी व फीचर कार्यक्रमों की प्रस्तुति। श्रोता अनुसंधान एकांश हेतु रिकार्डिंग पर आधारित सर्वेक्षण। कालांतर में राष्ट्रीय वार्ता, सामयिकी, उद्योग पत्रिका के अलावा निजी निर्माता द्वारा निर्मित अग्निलहरी जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के जरिए समय-समय पर आकाशवाणी से जुड़ाव। 1991 से 1992 दूरदर्शन, दिल्ली के समाचार प्रसारण प्रभाग में अस्थायी तौर संपादकीय सहायक कार्य। कई महत्वपूर्ण वृतचित्रों हेतु शोध एवं आलेख। 1993 से निजी निर्माताओं व चैनलों हेतु 500 से अधिक कार्यक्रमों में निर्माण/ निर्देशन/ शोध/ आलेख/ संवाद/ रिपोर्टिंग अथवा स्वर। परशेप्शन, यूथ पल्स, एचिवर्स, एक दुनी दो, जन गण मन, यह हुई न बात, स्वयंसिद्धा, परिवर्तन, एक कहानी पत्ता बोले तथा झूठा सच जैसे कई श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम। साक्षरता, महिला सबलता, ग्रामीण विकास, पानी, पर्यावरण, बागवानी, आदिवासी संस्कृति एवं विकास विषय आधारित फिल्मों के अलावा कई राजनैतिक अभियानों हेतु सघन लेखन। 1998 से मीडियामैन सर्विसेज नामक निजी प्रोडक्शन हाउस की स्थापना कर विविध कार्य।

संपर्क -: ग्राम- पूरे सीताराम तिवारी, पो. महमदपुर, अमेठी, जिला- सी एस एम नगर, उत्तर प्रदेश , डाक पता: 146, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली- 92 Email:- amethiarun@gmail.com . फोन संपर्क: 09868793799/7376199844

_____

Disclaimer : The views expressed by the author in this feature are entirely his own and do not necessarily reflect the views of INVC NEWS .

URL : https://www.internationalnewsandviews.com/20वां-कथन-अविवाहित-सानंद-की/

12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.

www.internationalnewsandviews.com